

यह भारत की बेटीयों की शक्ति संकल्प और सामर्थ्य की एक प्रतीकात्मक तस्वीर थी। जब विश्व कप के फाइनल में जब भारतीय बेटीयें आमने-सामने हों, तो वह पल भारत के लिए गौरव का नहीं, बल्कि आत्मविश्वास का उत्सव बन जाता है। उन्होंने कहा कि दिव्य देशमुख द्वारा खिताब जीतना और कोनरेड हप्पी द्वारा उपविजेता बनना इस बात का प्रमाण है कि भारत की बेटीयें अब किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं।

सहायक आयुक्त
आदिवासी विकास, कांके

